

# Mahashivaratri Puja

Date : 15th February 2004  
Place : Pune  
Type : Puja  
Speech : Hindi & English  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	01 - 03
English	05 - 05
Marathi	-

### II Translation

English	06 - 06
Hindi	04 - 05
Marathi	07 - 07

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari



### महाशिवरात्रि पूजा (पुणे 15-02-2004)

आज हम लोग यहाँ गुरु की पूजा करने के लिए उपस्थित हुए हैं। गुरु को सारे देवताओं से, देवियों से ऊँचा माना जाता है। वास्तविक ये गुरु कौन हैं? इसमें सबसे ज्यादा कौन-सी शक्ति संचरित है। ये गुरु तत्व जो है, यही शिव है। शिव स्वरूप जो शक्ति है उसी को हमें गुरु की शक्ति समझना चाहिए क्योंकि जब आप गुरु की शक्ति प्राप्त करते हैं और आपके अन्दर वह शक्ति प्लावित होती है तब आप स्वयं भी गुरु हो जाते हैं। पर कार्य जो इस शक्ति का है वो है आपका 'कल्याण'। जिसको यह शक्ति प्राप्त होती है उसको यह समझ लेना चाहिए कि अब उसका 'कल्याण' हो गया। 'कल्याण' का मतलब छोटे शब्दों में देना बड़ा

कठिन है। 'कल्याण' मानें हर तरह से साफल्य, हर तरह से प्लावित होना, हर तरह से अलंकृत होना।

जब आशीर्वाद में कोई कहता है कि तुम्हारा 'कल्याण' हो तो क्या होना चाहिए? क्या होता है? ये कल्याण क्या है? यह वही कल्याण है जिसको हम 'आत्मसाक्षात्कार' कहते हैं। बगैर आत्मसाक्षात्कार के कल्याण नहीं हो सकता। उसकी समझ भी नहीं आ सकती और उसको आत्मसात भी नहीं किया जा सकता। ये सब चीजें एक साथ कल्याणमय होती हैं और जिसकी वजह से मनुष्य अपने को अत्यन्त सुखी, अत्यन्त तेजस्वी समझता है। इस कल्याणमार्ग के लिए आपको जो करना पड़ा वो कर दिया, जो मेहनत करनी थी सो कर ली, जो विश्वास धरने थे वो धर लिए। लेकिन जब कल्याण का मार्ग अब मिल गया, जब आपको गुरु ने मन्त्र दे दिया कि आपका कल्याण हो जाए तो क्या चीज घटित होगी? आपके अन्दर सबसे बड़ी चीज समाधान। इसके बाद कुछ खोजना नहीं। अब आप स्वयं भी गुरु हो गए। अब आपको कुछ विशेष प्राप्त होने वाला नहीं है। किन्तु इस समाधान का जो आशीर्वाद है उसको आप महसूस कर सकेंगे। उसको आप जान सकेंगे और उसमें आप रममाण हो सकेंगे। पहले तो देखिए, सबसे बड़ी चीज है शारीरिक-शारीरिक तकलीफें, शारीरिक दुर्बलता इस कल्याण के मार्ग से साफ हो जाएंगी। आपकी शारीरिक तकलीफें खत्म हो जाएंगी। यह नहीं हुई तो सोचना है कि अभी कल्याण नहीं हुआ। उसके बाद आपकी मानसिक दुर्बलताएं जो हैं वो भी कल्याण में सब खत्म हो जानी चाहिए। जो दुर्बलता आपके अन्दर मानसिक है, जिसके कारण आप पूरी तरह से खिल नहीं पाते, वो शक्ति इसमें है और आप इसको जब प्राप्त करते हैं तो आपका वाकई कल्याण हो जाता है, माने आप पार हो जाते हैं। इसमें भी श्री महादेव जी सहायक हैं। जब आपकी कुण्डलिनी आपके सहस्रार





को छेदती है सो वहाँ महादेव बैठे हुए हैं। इसीलिए उनको महादेव कहते हैं। देवों में देव महादेव होते हैं।

इस कल्याण मार्ग में और बहुत सी उपलब्धियाँ हैं। इसमें सबसे बड़ी उपलब्धि है शान्ति, मानसिक शान्ति, शारीरिक शान्ति और सबसे बढ़कर सांसारिक शान्ति। संसार की अनेक व्याधियाँ हैं, अनेक तकलीफें हैं! वो सब इसको पाकर, इस कल्याण को पाकर खत्म हो जाती हैं। उसका अस्तित्व ही नहीं रहता है। ऐसे लोग आप देख सकते हैं दुनिया में होते हैं जो कि इस कल्याण की शक्ति को प्राप्त करके आराम से अपने स्थानापन्न होकर के ध्यानस्थ हो जाते हैं। यही कल्याण है जिससे मनुष्य में पूरी तरह का सन्तुलन आ जाता है। और वो सन्तुलन पाने के लिए आपको सिर्फ गुरु शरण लेनी चाहिए। गुरु के शरण जाने से आपमें वो सन्तुलन आ जाएगा। कि आपको ऐसा लगेगा कि आपने सब कुछ पा लिया, अब और कुछ पाने का नहीं। इस प्रकार का सन्तुलन एक विलक्षण शक्ति देता है। और वो शक्ति, मैं उसे प्रेम की शक्ति कहती हूँ, जिसे

मनुष्य जब प्राप्त करता है तो उसका सारा शरीर रोमांचित हो जाता है। माने किसी अद्वितीय शक्ति ने उनको आलिंगन किया हो। और उनके अन्दर ये शक्ति भी जिससे वो सारी दुनिया की परेशानियाँ, उथल पुथल, असन्तुलन, सब से ऊपर उठकर एक सन्तुलन में विचरण करते हैं। इसलिए इस शक्ति को प्राप्त करने के लिए लोग बहुत कोशिश करते हैं। और वो दूसरे मनुष्य से, मानव से ही इसे प्राप्त करते हैं जो स्वयं भगवान स्वरूप हो जाता है और जो स्वयं ही इस चीज़ को प्राप्त किए हुए हैं।

### प्रवचन (अंग्रेजी से अनुवादित)

ये ऐसा विषय है जिसे केवल हिन्दी भाषा में ही वर्णन किया जा सकता है। इसमें बताया गया है कि गुरु पद किसी अन्य व्यक्ति से ही प्राप्त किया जा सकता है परन्तु स्वयं उस व्यक्ति में भी यह शक्ति होनी चाहिए। आरम्भ में मानसिक शान्ति की शक्ति तथा सभी सांसारिक, मानसिक तथा शारीरिक समस्याओं पर विजय पाने कि शक्ति। गुरु के आशीर्वाद तथा अपने मानसिक सन्तुलन से आप इन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। जब आप स्वयं गुरु बन जाते हैं तो आप में भी अन्य



बाद आपको भी यही शक्ति प्राप्त होती है। गुरु बनने के लिए व्यक्ति को प्रयत्न नहीं करना चाहिए। ऐसा करना व्यवहारिक नहीं है। गुरु बनने का यदि आप प्रयत्न करेंगे तो आप कभी गुरु नहीं बन पाएंगे। बिना मांगे, बिना प्रयत्न किए, यह स्थिति स्वतः आप में आनी चाहिए। 'ध्यान' ही इस स्थिति को प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग है। ध्यान अर्थात् Meditation। केवल ध्यान करें, कुछ मांगें नहीं। ध्यान ही आपको वह शरीर यन्त्र प्रदान करता है जो गुरु की महान शक्ति को धारण कर सके। और तब स्वतः आप यह शक्ति अन्य लोगों को भी देते हैं। इसके लिए आपको परिश्रम नहीं करना पड़ता। आपकी उपस्थिति मात्र से ही लोगों को पूर्ण सन्तोष की यह शक्ति प्राप्त हो जाती है तथा आपको और अन्य लोगों को मोक्ष मिल जाता है। इस प्रकार उत्थान यात्रा के मार्ग की सभी समस्याएं समाप्त हो जाती हैं और स्वर्गीय शान्ति एवं आनन्द

लोगों को आशीर्वादित करने को शक्ति आ जाती है। आशीर्वाद देने की इस शक्ति से आप बहुत से लोगों को गुरु बना सकते हैं। एक बार जब कोई गुरु बन जाता है और उसमें शक्ति होती है तो यह अत्यन्त तुष्टदायी और श्रेयस्कर होती है। व्यक्ति में इतना संतोष होता है कि उसे किसी चीज की आवश्यकता नहीं रहती। यह श्री शिव की शक्ति है। आपने देखा है कि श्री शिव के पास बहुत अधिक कपड़े नहीं हैं। वे कोई श्रृंगार नहीं करते, हर समय ध्यान अवस्था में बैठे रहते हैं। किसी चीज की उन्हें आवश्यकता नहीं रहती। अपने आप में वे इतने संतुष्ट हैं कि उन्हें किसी चीज की चाहत नहीं है। यदि आपका कोई गुरु है जो उस स्तर का है और योग्य है तो आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के

के आशीर्वाद में आप शराबोर हो जाते हैं। इसी कारण से इसे 'कैवल्य' कहा गया है अर्थात् केवल आशीर्वाद। इसके लिए कोई अन्य शब्द नहीं बनाया जा सकता। इसका वर्णन करने का कोई अन्य मार्ग नहीं है। आपने इसी स्थिति में उन्नत होना है। आप जानते हैं कि आप उस अवस्था में हैं। यह इतनी उच्चावस्था है कि एक बार इसमें पहुँचने के पश्चात् मांगने के जैसा कुछ नहीं रह जाता। आप इतने संतुष्ट हो जाते हैं। इस विशिष्ट शक्ति के विषय में मैं लगातार बोल सकती हूँ। अतः कृपया मैंने जो कुछ कहा है उस पर ध्यान लगाएं। आप सबमें ये अवस्था प्राप्त करने की योग्यता है, पूर्ण शान्ति एवं आनन्द की अवस्था प्राप्त करने की।

परमात्मा आपको धन्य करें।

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## ENGLISH TALK

This is a subject which you can only explain in Hindi language, which says that this Gurupada you get from somebody else. But that somebody else is itself, is endowed with, the power, the power of peace of mind, to begin with, and also the power to overcome all kinds of earthly problems, mental problems, physical problems. All these problems you can solve through your mental balance and mental blessings from your Guru. When you become the Guru, you yourself have the power, to bless others. With your blessing power you can create a guru out of many. And once the Guru is created and there is a Guru, who has this power, it's very satisfying and is very enabling.

The satisfaction is so much that you don't want anything. This is the power of Shiva. You have seen Shiva, doesn't have much clothes, He doesn't decorate Himself, He is just sitting in meditative mood, all the time. He doesn't want anything. He's so satisfied with Himself that He doesn't want anything. And that is the power you get after the Self-realization, if you have a Guru, and Guru of that level and caliber.

One should not try to become a Guru. That's very, impractical. If you try to become, you'll never. It has to come to you automatically, without any asking, without any effort. So the only way you can get to it is through Dhyana. Dhyana is meditation. When you meditate, just meditate, and meditate, do not ask for anything. Meditation itself gives you that instrument which can bear this great power of the Guru. And then you automatically, you give this power to others; you don't have to work it out. Just in your presence, people can get this power of complete satisfaction. And there is salvation, for you and for others.

So all the problems which are faced for the journey of ascent are finished and you [are or now] drenched in the bliss of heavenly, peace and joy. That's why it is called as Kaivalya, means only, only the blessings. See that means there is no other word to translate it. There's no other way of explaining it. It's a state. It's a Stithi. It's a state, in that state you have to rise and you know that you are in that state. It's a very remarkable thing, that once you reach that state you don't have to ask for anything. It's all there, and you are so satisfied. I can go on talking about this special power but I think whatever I have said please meditate on that. And you are all capable of reaching that state. That state of complete peace and joy.

May God bless you.

# ENGLISH TRANSLATION

## (Hindi Talk)

Today we are present here to worship the Guru. The Guru is regarded to be the highest of all the deities. Who is this Guru in reality? Which is the power that flows in it in abundance? This Guru tatva is the Shiva.

We should regard The power that is in the form of Shiva to be the power of the Guru because When you get this power of the Guru and it starts flowing in you, then you become Guru yourselves. But the job of this power is your blessing (Kalyana). The one who gets this power should understand that now he has been blessed. It is difficult to explain the word 'Kalyana' in simple words. 'Kalyana' means success in every way; to be nourished and glorified fully. What should be the meaning when someone blesses us and says, 'You have Kalyana (*get blessed*)'? What does it mean? What is this Kalyana? This Kalyana is what we call Self-Realisation (*Atma Sakshatkara*). There would be no Kalyana without Self-Realisation. It could neither be understood nor be absorbed. All these things become blissful and the person finds oneself very comfortable and splendid (*Tejaswi*).

All that could be done for (*by*) you to achieve this state has been done. All the efforts have been made. But now when you have got this path of the Kalyana, when he has given the mantra that you have the *Kalyana*, what does it mean? Complete satisfaction comes in you. Now there is nothing to search for, you have become guru yourselves. Nothing special is now going to be achieved. But you will experience the blessings of this Samadhana, of this state that is samadhana. You will understand it and get established in it.

First and foremost thing is Physical-Physical Problems, Physical Weaknesses. All these problems disappear with this path of Kalyana. You will get rid of your physical problems. If it has not yet taken place then one has to think that the state of Kalyana has not yet been achieved. Secondly Mental Weaknesses, the obstructions that persist in your achieving the state of Kalyana will be finished-the mental weakness that still persists in you and because of which you cannot blossom fully. That power lies in this. When you achieve this power then you really have the Kalyana- solution to all the problems, means you get self-realized. Shri Mahadeva is helpful in this too. When your Kundalini pierces the Sahsrara, Shri Mahadeva is seated there. That is why He is called Mahadeva-The God of Gods is Mahadeva.

There are many other achievements in this path of Kalyana. The biggest of them is 'Peace'-Mental Peace, Physical Peace and, above all, Worldly Peace. Many problems and difficulties are there in the world. They could all be got rid of after achieving this Kalyana-Self-Realisation. They cease to exist. You find many people in this world, who, after achieving this power, get established in meditation while acting at their places. This is Kalyana through which man gets complete balance.

You should take refuge in the Guru to attain this balance. By taking refuge at the Holy Feet of the Guru, you will get such a perfect balance that you will feel as if you had achieved everything and have nothing more to get.

Such a balance gives tremendous power. It is the power of love. When one receives it, the whole body rejoices as if some Divine Power had embraced him. In that state, the person rises above all the worldly turmoils and imbalances and lives in perfect balance. This is the reason why people put lot of effort to attain this power.

But this power could be got from some other people, from someone who himself has already achieved it and has become Godly.

# MARATHI TRANSLATION

## (Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari



### श्री शिवपूजा पुणे

प.पू. श्रीमाताजी  
निर्मलादेवीचेभाषण  
१५ फेब्रुवारी २००४

सहजयोग्यांनी  
कैवल्य'स्थिती  
पर्यंत उन्नत  
व्हायला पाहिजे.



आज आपण महान गुरुची पूजा करण्यासाठी इथे एकत्र आलो आहोत. सर्व देव-देवतांचा हा महान गुरु कोण, या महान शक्तीचे स्वरूप काय आहे व ती कशी सर्वत्र संचारित होत राहते हे आपण नीट जाणले पाहिजे. हे गुरुतत्त्व म्हणजेच साक्षात् शिव, शिवशक्ति म्हणजेच गुरुशक्ति. ही गुरु-शक्ति मिळाल्यावर तुम्ही स्वतःच स्वतःचे गुरु होता.

या शक्तीचे एकमेव कार्य व उद्देश म्हणजे कल्याण. ज्याला या शक्तीचे आशीर्वाद मिळतात त्याचे सर्व प्रकारे कल्याणच होते, सर्व प्रकारची सफलता मिळते; एवढेच नव्हे तर त्याचे जीवनच प्लावित व अलंकृत होते. मानवाचे संपूर्ण कल्याण आत्मसाक्षात्कार मिळण्यामधूनच होणार ; आत्मसाक्षात्काराशिवाय कल्याण संभवत नाही. आत्मसाक्षात्कारानंतरच मानवाला सर्व सुख खऱ्या अर्थाने मिळत असते; त्याच्या जीवनालाच तेज येते; पण त्याहीपेक्षा मोठे आशीर्वाद म्हणजे तो पूर्णार्थाने समाधानी होतो. समाधान हे त्याला मिळणारे वरदानच म्हटले पाहिजे आणि त्या समाधानांत तो रममाण होतो.

अशा कल्याणामधून तुमची सर्व शारीरिक व मानसिक संकटे आणि क्लेश दूर होत असतात. किंबहुना आजार येणे म्हणजे खरे कल्याण अजून होत नाही असे समजावे. तसेच सांसारिक सर्व अडचणी व समस्या पण दूर होतात. कुण्डलिनी सहस्रारात आल्यावर सर्व देवांचे देव म्हणजे महादेव ही कल्याणकारी शक्ती उपलब्ध होते आणि मानव संतुलनांत येऊन खऱ्या शांतीचा अनुभव घेतो.

त्यासाठीच आपण या गुरुला शरण गेले पाहिजे; त्यानंतर मग कांहीं मागायचे उरतच नाही आणि सर्व कांहीं मिळाले अशी श्रद्धा तयार होते; त्यांतूनच तुम्हाला प्रेमाची शक्ति प्राप्त होते, किंबहुना ही प्रेमशक्ति तुम्हाला कवटाळते आणि तुम्ही रोमांचित होऊन जाता. ही शक्ति मिळवण्याचा प्रयत्न तुम्ही करायला हवा.

ज्याने ही शिवशक्ति प्राप्त केली आहे अशा गुरुकडूनच ती तुम्हाला मिळू शकते आणि तुम्हालाही गुरुपद मिळते. मग तुमचे सारे भौतिक, मानसिक व शारीरिक प्रश्न नाहीसे होतात. हेच त्या शक्तीचे आशीर्वाद असतात हे लक्षांत घ्या. आपणही एक आशीर्वाद म्हणजे तुम्ही स्वतः गुरुपदावर आरूढ झालात की हेच आशीर्वाद तुम्ही इतरांनाही मिळवून देत राहता आणि त्यातून आपणही नवे गुरु तयार होतात.

ही कल्याणकारक शक्ति मिळालेला मानव अत्यंत समाधानी असतो, त्याला बाकी कसल्या इच्छाच होत नाहीत. हीच शिवशक्ति आहे. स्वतः शिवदेखील ध्यानांतच शांतपणे बसलेले आहेत. हा आत्मसाक्षात्काराचा प्रसाद आहे पण तो देणाराही त्या उच्च स्थितीला पोचलेला सिद्ध असावा लागतो. हे गुरुपद मिळवण्यासाठी तुम्हाला वेगळे असे कांहीं करावे लागत नाही, ध्यानस्थितीमधे प्रगत व प्रगल्भ होत स्थिरावल्यावर ही परिपक्वता सहज प्राप्त होते. मग तुम्ही कांहीं मागतही नाही; तुमच्या फक्त सांनिध्य्यांत येणाऱ्यालाही समाधान व शांति मिळते.

हीच स्वर्गसुखाची शांति व आनंद आहे. म्हणूनच त्याला "कैवल्य" स्थिति म्हणतात. सहजयोगात तुम्ही अधिकाधिक प्रगल्भ होत या स्थितीला उन्नत होऊन पोचले पाहिजे आणि त्यांत स्थिरावले पाहिजे. तुमच्या जवळ ही क्षमता आहे. या स्थितीला येण्याचाच ध्यास घ्या. सर्वांना अनंत आशीर्वाद.